

हिन्दी में

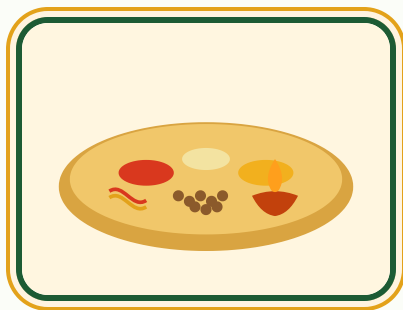
॥ ॐ सावित्र्यै नमः ॥

वट सावित्री व्रत कथा

पूजा विधि, सामग्री, मंत्र और आरती सहित



vatsavitripuja.com



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ सावित्र्यै नमः ॥

सावित्री सत्यवान की संपूर्ण व्रत कथा

VAT SAVITRI VRAT KATHA

ज्येष्ठ अमावस्या या वट पूर्णिमा के दिन बरगद की पूजा और परिक्रमा करके यह कथा श्रद्धा से पढ़ें या सुनें, फिर आरती करें और बड़ों का आशीर्वाद लें।

विषय-सूची CONTENTS

01	पूजा सामग्री	आवश्यक वस्तुओं की सूची	3
02	पूजा विधि	बरगद की पूजा, परिक्रमा, आरती विधि	5
03	पूजा के मंत्र	अर्घ्य मंत्र और वट प्रार्थना, भावार्थ सहित	9
04	वट सावित्री व्रत कथा	छह भागों में संपूर्ण कथा	10
	पहला भाग: राजा अश्वपति और सावित्री का जन्म		10
	दूसरा भाग: सावित्री ने सत्यवान को चुना		11
	तीसरा भाग: वन का जीवन और तीन दिन का व्रत		12
	चौथा भाग: वन में वह निर्णायक दिन		13
	पांचवां भाग: सावित्री ने किया यमराज का अनुसरण		14
	छठा भाग: सत्यवान का जीवित होना और परिवार का सुख लौटना		15
05	आरती वडराजा	वट सावित्री की मराठी आरती	16
06	आरती का अर्थ	हर पद का सरल अर्थ	17
07	समापन प्रार्थना	क्षमा प्रार्थना, जयकारा	18

पूजा की तैयारी

वट सावित्री पूजा सामग्री

बरगद के पास ले जाने वाली वस्तुओं की सूची

वट सावित्री पूजा सामग्री वे वस्तुएँ हैं जिन्हें महिलाएँ वट सावित्री व्रत या वट पूर्णिमा के दिन बरगद के पेड़ के पास ले जाती हैं। इनमें से अधिकतर चीज़ें हिंदू घर में पहले से होती हैं और कुछ भी महँगा आवश्यक नहीं है। नीचे सूची वर्गों में दी गई है ताकि पूजा की थाली सजाते समय आप एक-एक करके मिला सकें। क्षेत्र और परिवार के अनुसार रीतियाँ भिन्न हैं; बड़ों की सलाह से वस्तुएँ जोड़ें या छोड़ें।

॥ पूजन और श्रृंगार के लिए ॥

- ❖ रोली या कुमकुम
- ❖ सिंदूर
- ❖ हल्दी, साबुत या पिंसी
- ❖ अक्षत (साबुत चावल)
- ❖ चंदन, यदि उपलब्ध हो
- ❖ ताज़े फूल और छोटी माला

❖ कुछ परिवारों में पान के पत्ते और सुपारी

❖ मौली या कलावा

॥ बरगद और परिक्रमा के लिए ॥

- ❖ कच्चा सूत, सफ़ेद या लाल/पीला रंगा हुआ, इतनी लंबी लच्छी या रील कि सारी परिक्रमाएँ हो जाएँ
- ❖ जड़ में चढ़ाने के लिए स्वच्छ जल से भरा लोटा या कलश
- ❖ बाँस या ताड़ के पत्ते का पंखा
- ❖ सावित्री और सत्यवान का छोटा चित्र या मिट्टी की प्रतिमा; कुछ परिवार यमराज और ब्रह्मा जी का चित्र भी रखते हैं
- ❖ बैठने के लिए छोटी चटाई या कपड़ा

परिक्रमा के समय सूत तने पर लपेटा जाता है।

वट सावित्री पूजा

॥ दीपक और धूप ॥

- ❖ मिट्टी या पीतल का दीपक, घी या तेल और रुई की बाती
- ❖ अगरबत्ती या धूप
- ❖ माचिस, सूत से दूर छोटे डिब्बे में
- ❖ आरती करनी हो तो कपूर

॥ भोग और प्रसाद ॥

- ❖ भीगे चने (काले चने रात भर भिगोए हुए); यही मुख्य भोग है
- ❖ मौसमी फल: आम, केला, लीची, कटहल या कोई भी पाँच फल
- ❖ पूरी, गुलगुले, हलवा, खीर या घर की बनी कोई मिठाई
- ❖ गुड़ या बताशे
- ❖ कुछ क्षेत्रों में नारियल

॥ सुहाग सामग्री और बायना ॥

- ❖ चूड़ियाँ, बिंदी, सिंदूर, मेहंदी, काजल, कंधी और शीशा, जो सावित्री को चढ़ाए जाते हैं या अन्य सुहागिनों को दिए जाते हैं
- ❖ सावित्री के लिए लाल या पीली चुनरी या छोटा वस्त्र

- ❖ उत्तर भारत की रीति में सास के बायने के लिए: फल, मिठाई, भीगे चने, साड़ी या वस्त्र, सुहाग सामग्री और कुछ रुपये

- ❖ सिक्के या दक्षिणा

॥ घर पर पूजा ॥

बहुत सी महिलाएँ शहरों में ऐसी जगह रहती हैं जहाँ पास में बरगद नहीं होता। यदि बरगद तक न पहुँच सकें तो मिट्टी या पानी के पात्र में बरगद की छोटी टहनी, या बरगद का चित्र, और लाल कपड़े से ढकी साफ़ चौकी और जोड़ लें। बाकी सूची वही रहती है।

॥ व्यावहारिक सुझाव ॥

- ❖ काले चने पिछली रात भिगो दें; प्रति महिला एक मुट्ठी पर्याप्त है।
- ❖ पूजा के बाद के लिए पानी की बोतल साथ रखें, विशेषकर गर्मी में।
- ❖ सिंथेटिक के बजाय सूती धागा चुनें और पेड़ के पास प्लास्टिक की थैलियाँ न छोड़ें।
- ❖ दीपक को सूखे पत्तों और कपड़ों से दूर रखें और जाने से पहले बुझा दें।

पूजन क्रम

वट सावित्री पूजा विधि

तैयारी, बरगद की पूजा, परिक्रमा और आरती, क्रमवार

वट सावित्री पूजा विधि वह विधि है जिससे विवाहित महिलाएँ वट सावित्री व्रत के दिन पूजा करती हैं। इस पूजा का सार सरल है: बरगद के पेड़ की पूजा, सावित्री और सत्यवान की आराधना, पेड़ की परिक्रमा करते हुए तने पर कच्चा सूत लपेटना और सावित्री की कथा सुनना। इसके लिए पुरोहित की आवश्यकता नहीं होती और महिलाएँ प्रायः समूह में पेड़ के पास जाती हैं। नीचे प्रचलित विधि दी गई है। अलग-अलग क्षेत्रों और परिवारों में रीतियाँ भिन्न होती हैं, इसलिए जहाँ अंतर हो वहाँ अपने बड़ों की परंपरा का पालन करें।

उत्तर भारत में यह पूजा ज्येष्ठ अमावस्या को होती है, जबकि महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण व पश्चिम के कई भागों में ज्येष्ठ पूर्णिमा को वट पूर्णिमा के रूप में। दोनों दिनों की विधि लगभग एक जैसी है।

॥ व्रत से पहले की तैयारी ॥

- ❖ एक-दो दिन पहले पूजा सामग्री की सूची के अनुसार सामान जुटा लें।
- ❖ पिछली शाम काले चने पानी में भिगो दें ताकि सुबह तक नरम हो जाएँ। भीगे चने इस दिन का मुख्य भोग हैं।

- ❖ पास का बरगद का पेड़ देख लें और हो सके तो उसके आसपास साफ़, छायादार जगह चुनें। शहरों में कई मंदिरों और पार्कों में बरगद होता है जहाँ महिलाएँ एकत्र होती हैं।
- ❖ यदि गर्मी में निर्जला व्रत रखना है तो पिछली शाम पर्याप्त पानी पी लें।

॥ सुबह की तैयारी ॥

- 1 जल्दी उठकर स्नान:** सुबह जल्दी उठें, स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र पहनें। लाल, पीले या अन्य चटकीले रंग प्रचलित हैं; कई महिलाएँ विवाह की साड़ी या नई साड़ी पहनती हैं।
- 2 सुहागिन का श्रृंगार:** माँग में सिंदूर भरें, चूड़ियाँ, बिंदी, मेहंदी और सुहाग के अन्य चिह्न धारण करें, जिन्हें मिलाकर सोलह श्रृंगार कहा जाता है।
- 3 संकल्प:** पूजा शुरू करने से पहले शांत बैठें, दाहिने हाथ में थोड़ा जल, अक्षत और फूल लेकर पति और परिवार के कल्याण के लिए व्रत और पूजा का संकल्प लें। फिर जल भूमि पर या थाली में छोड़ दें।

- 4 **थाली सजाएँ:** पूजा की थाली में रोली, कुमकुम, सिंदूर, हल्दी, अक्षत, फूल, दीपक, धूप, फल, भीगे चने, पूरी या मिठाई, बाँस या ताड़ का पंखा, कच्चा सूत और जल से भरा लोटा रखें।

॥ बरगद के पेड़ के नीचे पूजा ॥

- 1 **स्थान साफ़ करें:** पेड़ की जड़ के पास की जगह साफ़ करें और तने की ओर मुख करके बैठें।
- 2 **सावित्री और सत्यवान की स्थापना:** कई महिलाएँ जड़ के पास सावित्री और सत्यवान का छोटा चित्र या मिट्टी की प्रतिमा रखती हैं। कुछ परिवार स्थानीय रीति के अनुसार यमराज और ब्रह्मा जी का चित्र भी रखते हैं।
- 3 **जल अर्पण:** लोटे से बरगद की जड़ में जल चढ़ाएँ।
- 4 **रोली, हल्दी और सिंदूर:** तने और प्रतिमाओं पर रोली, हल्दी और सिंदूर लगाएँ, फिर अक्षत और फूल चढ़ाएँ।
- 5 **दीपक और धूप:** दीपक और धूप जलाकर पेड़ के सामने धीरे-धीरे घुमाएँ।
- 6 **भोग लगाएँ:** भीगे चने, फल (आम, केला या मौसमी फल), पूरी और मिठाई का भोग लगाएँ। कुछ महिलाएँ सावित्री के लिए वस्त्र या सुहाग सामग्री भी चढ़ाती हैं।
- 7 **पंखा झलें:** कई क्षेत्रों में महिलाएँ बाँस या ताड़ के पंखे से पेड़ की ओर हवा करती हैं, यह स्मरण करते हुए कि सावित्री ने वन में सत्यवान की सेवा की थी।

वट सावित्री पूजा

- 8 **परिक्रमा:** पेड़ की घड़ी की दिशा में परिक्रमा करें और चलते हुए तने पर कच्चा सूत लपेटती जाएँ। अधिकतर महिलाएँ 7 परिक्रमा करती हैं; कुछ 11, 21 या 108।
- 9 **कथा सुनें:** साथ बैठकर वट सावित्री व्रत कथा पढ़ें या सुनें। प्रायः महिलाएँ बारी-बारी से पढ़ती हैं या कोई बड़ी महिला कथा सुनाती है।
- 10 **प्रार्थना:** हाथ जोड़कर सावित्री और वट वृक्ष से परिवार के कल्याण की प्रार्थना करें। कई महिलाएँ सावित्री या वट वृक्ष की छोटी प्रार्थना पढ़ती हैं। आप आरती भी कर सकती हैं।

॥ परिक्रमा कैसे करें ॥

- 1 **पहले का पूजन पूरा करें:** पूजा विधि के अनुसार जड़ में जल चढ़ाएँ, रोली, हल्दी और सिंदूर लगाएँ, फूल चढ़ाएँ और दीपक जलाएँ।
- 2 **सूत का सिरा बाँधें:** सूत का एक सिरा तने पर ढीला बाँध दें, या जहाँ से शुरू करें वहाँ छाल पर दबाकर रखें।
- 3 **घड़ी की दिशा में चलें:** पेड़ को अपनी दाहिनी ओर रखते हुए घड़ी की दिशा में घूमें। हिंदू पूजा में परिक्रमा की यही सामान्य दिशा है।
- 4 **चलते हुए लपेटें:** सूत को हाथ से खुलने दें ताकि हर फेरे में वह तने पर लिपटता जाए। इसे कमर से छाती तक की सुविधाजनक ऊँचाई पर रखें।

- 5 **चलते हुए प्रार्थना:** कई महिलाएँ मन में सावित्री की प्रार्थना या भगवान का नाम दोहराती हैं, या बस परिवार के कल्याण की कामना मन में रखती हैं।
- 6 **फेरे गिनें:** अपने परिवार में प्रचलित संख्या पूरी करें, फिर सूत का सिरा पहले के लपेटों से बाँध दें।
- 7 **प्रणाम करें:** हाथ जोड़कर पेड़ को प्रणाम करें और भीगे चने व फल चढ़ाएँ।

॥ वट सावित्री की आरती करने की विधि ॥

आरती वट सावित्री पूजा विधि के अंत में, कथा के बाद की जाती है। सामान्य विधि इस प्रकार है:

- 1 आरती की थाली में घी का दीपक (या कपूर), कुछ फूल, कुमकुम और अक्षत रखें। पास में छोटी घंटी रखें।
- 2 बरगद के वृक्ष और सावित्री व सत्यवान की प्रतिमा या चित्र के सामने खड़ी हों। घर पर बरगद की टहनी से पूजा हो रही हो तो टहनी के सामने खड़ी हों।
- 3 दीपक जलाएँ और दूसरी महिलाओं के साथ मिलकर आरती आरंभ करें।
- 4 गाते हुए थाली को वृक्ष और प्रतिमा के सामने धीरे-धीरे दक्षिणावर्त (घड़ी की दिशा में) घुमाएँ। दूसरे हाथ से या किसी और से घंटी बजवाएँ।
- 5 अंत में वृक्ष की जड़ पर एक फूल अर्पित करें और प्रणाम करें।

वट सावित्री पूजा

- 6 थाली सबके पास ले जाएँ। हर कोई दोनों हथेलियाँ लौ के ऊपर से घुमाकर आँखों और सिर से लगाए।
- 7 पूजा में हुई भूल-चूक के लिए क्षमा माँगें, बड़ों और सास के चरण छुएँ और भीगे चने व फल का प्रसाद बाँटें।

जब एक ही वृक्ष पर बहुत सी महिलाएँ पूजा करती हैं, तो एक समूह आरती पूरी करके अगले समूह के लिए जगह छोड़ देता है।

॥ पूजा के बाद ॥

- 1 **बड़ों के चरण स्पर्श:** घर लौटकर पति, सास और अन्य बड़ों के चरण छूकर आशीर्वाद लें।
- 2 **बायना दें:** उत्तर भारत के कई परिवारों में बहू अपनी सास को बायना देती है, जिसमें फल, मिठाई, भीगे चने, वस्त्र, सुहाग सामग्री और कुछ रुपये होते हैं।
- 3 **दान:** कुछ महिलाएँ किसी ज़रूरतमंद या ब्राह्मण को फल, अनाज, वस्त्र या थोड़े रुपये दान करती हैं।
- 4 **पारण:** व्रत कब खोला जाए, यह पारिवारिक परंपरा पर निर्भर है। कई महिलाएँ पूजा के बाद कुछ भीगे चने, और कुछ घरों में बरगद की कोमल कोंपल, पानी के साथ निगलकर व्रत खोलती हैं। कुछ शाम तक व्रत रखती हैं।

॥ पास में बरगद न हो तो घर पर पूजा ॥

बहुत सी महिलाएँ ऐसी जगह रहती हैं जहाँ पास में बरगद नहीं होता। ऐसे में इसी क्रम से घर पर पूजा की जा सकती है। प्रायः बरगद की एक छोटी टहनी लाकर मिट्टी या पानी के पात्र में रखी जाती है, या साफ़ चौकी पर सावित्री, सत्यवान और वट वृक्ष का चित्र रखा जाता है। टहनी या चित्र पर जल, रोली, फूल, सूत और भीगे चने चढ़ाकर उसी की परिक्रमा की जाती है। जीवित पेड़ को हानि न पहुँचाएँ; केवल छोटी टहनी लें या चित्र का उपयोग करें। श्रद्धालु मानते हैं कि स्थान से अधिक सच्ची श्रद्धा का महत्व है।

॥ व्रत और स्वास्थ्य ॥

कई महिलाएँ इस दिन निर्जला व्रत रखती हैं। गर्भवती या स्तनपान कराने वाली महिलाएँ, अस्वस्थ महिलाएँ, बुजुर्ग और दवा लेने वाले लोग पहले डॉक्टर से सलाह लें और चाहें तो फलाहार या हल्का व्रत रखें। मई और जून की गर्मी में व्रत से पहले और बाद में भरपूर पानी पिएँ और दोपहर की धूप में देर तक खड़े होने से बचें। यह चिकित्सा सलाह का विकल्प नहीं है; अस्वस्थ होने पर डॉक्टर से परामर्श लें।

कथा से पहले

वट सावित्री पूजा के मंत्र

सावित्री को अर्घ्य देने का मंत्र

यह इस व्रत से सबसे अधिक जुड़ा हुआ श्लोक है। लोटे से देवी सावित्री को अर्घ्य (जल) देते हुए यह मंत्र बोला जाता है। कुछ पुस्तिकाएँ बरगद की जड़ में जल देते समय भी इसे बोलने को कहती हैं।

अवैधव्यं च सौभाग्यं देहि त्वं मम सुव्रते।
पुत्रान् पौत्रांश्च सौख्यं च गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

भावार्थ: हे उत्तम व्रत वाली सावित्री, मुझे अखंड सुहाग और सौभाग्य दो, पुत्र, पौत्र और सुख दो। यह अर्घ्य स्वीकार करो, तुम्हें नमस्कार है। आज बहुत सी महिलाएँ “पुत्र और पौत्र” को संतान और परिवार की आगे की पीढ़ियों के अर्थ में लेती हैं।

जड़ में जल देते समय बरगद की प्रार्थना

अर्घ्य के बाद बरगद की जड़ में धीरे-धीरे जल डालते हुए यह प्रार्थना की जाती है। कुछ पुस्तिकाओं में इसके आरंभ में जल डालते समय की एक पंक्ति भी दी जाती है।

वट सिंचामि ते मूलं सलिलैरमृतोपमैः।
यथा शाखाप्रशाखाभिर्वृद्धोऽसि त्वं महीतले।
तथा पुत्रैश्च पौत्रैश्च सम्पन्नं कुरु मां सदा॥

भावार्थ: हे वट, मैं अमृत जैसे जल से तुम्हारी जड़ सींचती हूँ। जैसे तुम धरती पर शाखाओं और उपशाखाओं के साथ फैले हो, वैसे ही मुझे सदा संतान और पीढ़ियों से संपन्न रखो। यह प्रार्थना बरगद की उस छवि पर आधारित है जिसकी लटकती जड़ें नए तने बन जाती हैं, जैसे परिवार बढ़ता रहता है।

कथा: पहला भाग

राजा अश्वपति और सावित्री का जन्म

वट सावित्री व्रत कथा

बहुत पुराने समय की बात है। मद्र देश में अश्वपति नाम के एक राजा राज करते थे। वे धर्मात्मा, दानी और सत्यवादी थे। विद्वानों का आदर करते थे और प्रजा का पूरा ध्यान रखते थे, इसलिए प्रजा भी उन्हें बहुत चाहती थी। पर उनके मन में एक ही दुख था: उनकी कोई संतान नहीं थी। संतान की कामना से राजा ने कठोर व्रत लिए। बहुत वर्षों तक वे संयम से रहे, थोड़ा सा भोजन करते और देवी सावित्री के मंत्रों के साथ पवित्र अग्नि में आहुतियाँ देते रहे।

अंत में देवी सावित्री प्रसन्न हुईं। वे यज्ञ की अग्नि से तेजस्वी रूप में प्रकट हुईं और बोलीं, “राजन, मैं तुम्हारी भक्ति, पवित्रता और संयम से प्रसन्न हूँ। जो चाहो, माँग लो।” अश्वपति ने प्रणाम करके संतान का वर माँगा, ताकि उनका वंश आगे चले। देवी ने कहा कि ब्रह्मा जी की इच्छा से तुम्हारे घर शीघ्र ही एक तेजस्विनी कन्या जन्म लेगी। इतना कहकर वे अंतर्धान हो गईं।

समय आने पर रानी ने एक सुंदर कन्या को जन्म दिया। देवी सावित्री की कृपा से जन्मी होने के कारण राजा और पुरोहितों ने उसका नाम सावित्री रखा। सावित्री अग्नि की लौ की तरह उज्ज्वल और पवित्र थी, उसकी वाणी मधुर थी और मन दृढ़। जब वह विवाह योग्य हुई तो

उसका रूप और तेज ऐसा था कि जो भी राजकुमार उसे देखता, वह संकोच में पड़ जाता। कोई भी उससे विवाह का प्रस्ताव रखने का साहस नहीं कर पाया।

वट सावित्री पूजा

10 / 18

कथा: दूसरा भाग

सावित्री ने सत्यवान को चुना

वट सावित्री व्रत कथा

बेटी को बड़ी और अविवाहित देखकर अश्वपति चिंतित हुए। उन्होंने सावित्री को बुलाकर कहा, “पुत्री, तुम्हारे विवाह का समय आ गया है, पर कोई तुम्हारा हाथ माँगने नहीं आता। तुम स्वयं जाकर अपने योग्य वर चुन लो। जिसे चुनोगी, मुझे बताना, मैं तुम्हारा विवाह उसी से कर दूँगा।” सावित्री ने पिता को प्रणाम किया और दरबार के वृद्ध मंत्रियों के साथ सोने के रथ में यात्रा पर निकल पड़ी। वह राजधानियों और वनों के शांत आश्रमों में गई, ऋषियों का सम्मान किया और जहाँ गई वहाँ दान दिया।

जब वह लौटी तो पिता के पास देवर्षि नारद बैठे थे। अश्वपति ने पूछा कि उसने किसे चुना है। सावित्री बोली, “शाल्व देश में द्रुमत्सेन नाम के एक धर्मात्मा राजा थे। समय के साथ वे अंधे हो गए और एक पुराने शत्रु ने उनका राज्य छीन लिया। तब वे अपनी पत्नी और छोटे पुत्र के साथ वन में जाकर तपस्वी की तरह रहने लगे। उनका वही पुत्र सत्यवान वन में ही बड़ा हुआ है। मैंने मन ही मन उसी को अपना पति चुना है।”

यह सुनकर नारद चिंतित हो गए। वे बोले, “राजन, सावित्री ने अनजाने में बड़ा कठिन चुनाव कर लिया है।” अश्वपति ने पूछा कि क्या सत्यवान में किसी गुण की कमी है। नारद ने कहा कि सत्यवान सत्यवादी, दानी, विद्वान, धैर्यवान, सुंदर और माता पिता का भक्त है। “पर

उसमें एक ही दोष है, जो उसके सब गुणों पर भारी है। आज से ठीक एक वर्ष बाद उसकी आयु पूरी हो जाएगी।”

राजा ने बेटी से कहा, “सावित्री, जाओ, कोई दूसरा वर चुन लो।” पर सावित्री ने शांत स्वर में उत्तर दिया, “कन्यादान एक ही बार होता है और एक बार किया गया चुनाव ही चुनाव है। उनकी आयु लंबी हो या छोटी, वे गुणवान हों या गुणहीन, मैंने एक बार पति चुन लिया है, अब दूसरी बार नहीं चुनूँगी। मन ने जो निश्चय किया है, मैं वही करूँगी।” उसके दृढ़ वचन सुनकर नारद ने राजा से कहा, “आपकी पुत्री की बुद्धि स्थिर है, उसे धर्म के मार्ग से नहीं हटाया जा सकता। उसका विवाह सत्यवान से कर दीजिए।” दोनों को आशीर्वाद देकर नारद चले गए।

वट सावित्री पूजा

कथा: तीसरा भाग

वन का जीवन और तीन दिन का व्रत

वट सावित्री व्रत कथा

अश्वपति सावित्री और पुरोहितों को साथ लेकर वन में पहुँचे। वहाँ अंधे राजा द्युमत्सेन एक पेड़ के नीचे कुश के आसन पर बैठे थे। अश्वपति ने उनसे सावित्री को पुत्रवधू के रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की। द्युमत्सेन ने संकोच से कहा, “हमारा राज्य छिन चुका है और हम वन में तपस्वियों की तरह रहते हैं। आपकी पुत्री यह कठिन जीवन कैसे सहेगी?” अश्वपति ने उत्तर दिया कि उनकी पुत्री जानती है कि सुख और दुख दोनों आते जाते रहते हैं, और उसने सब समझकर ही यह चुनाव किया है। इस तरह आश्रम में सावित्री और सत्यवान का विवाह हुआ और अश्वपति संतुष्ट होकर लौट गए।

पिता के जाते ही सावित्री ने अपने गहने और कीमती वस्त्र उतार दिए और वनवासियों की तरह सादे वस्त्र पहन लिए। वह अपने अंधे ससुर और सास की सेवा मन से करती, पति से मधुर वचन बोलती और अपने सब कर्तव्य निभाती। आश्रम में सब उससे प्रसन्न थे। पर नारद के वचन दिन रात उसके मन में गूँजते रहते और वह चुपचाप दिन गिनती रहती।

जब उसने देखा कि अब से चौथे दिन सत्यवान की मृत्यु होनी है, तो उसने कठोर व्रत का संकल्प लिया। तीन दिन और तीन रात उसने उपवास किया और खड़े खड़े प्रार्थना करती रही। द्युमत्सेन चिंतित हुए और उन्होंने उसे विश्राम करने को समझाया, पर सावित्री ने

विनम्रता से कहा कि उसने व्रत का संकल्प लिया है और वह उसे पूरा करेगी। तब उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। अंतिम रात वह बिल्कुल नहीं सोई। उस निर्णायक दिन की सुबह उसने पूजा पूरी की, बड़ों और आश्रम के ऋषियों को प्रणाम किया और “अखंड सौभाग्यवती भव” का आशीर्वाद चुपचाप स्वीकार किया।

वट सावित्री पूजा

कथा: चौथा भाग

वन में वह निर्णायक दिन

वट सावित्री व्रत कथा

उस सुबह सत्यवान कुल्हाड़ी लेकर फल और लकड़ी लाने वन की ओर चला। सावित्री ने साथ चलने की इच्छा जताई। सत्यवान बोला, “तुम कभी घने वन में नहीं गई। रास्ता कठिन है और उपवास के कारण तुम कमजोर हो।” पर सावित्री ने आग्रह किया, तो सत्यवान ने कहा कि माता पिता से अनुमति ले लो। जिस सावित्री ने पूरे एक वर्ष में सास ससुर से कभी कुछ नहीं माँगा था, उसने आज विनती करके अनुमति माँगी और उन्होंने प्रसन्नता से दे दी। ऊपर से मुस्कुराती, पर भीतर से दुख में जलती सावित्री सुंदर वन में पति के साथ चलती रही और हर कदम पर उसे निहारती रही।

सत्यवान ने फल इकट्ठे किए और लकड़ी काटने लगा। काम करते करते उसे पसीना आने लगा और सिर में तेज़ दर्द उठा। वह बोला, “सावित्री, मेरा सिर दुख रहा है, शरीर में जलन हो रही है और कमजोरी लग रही है। मुझसे खड़ा नहीं हुआ जाता, मैं लेटना चाहता हूँ।” सावित्री भूमि पर बैठ गई और उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। परंपरा के अनुसार यह सब एक बरगद के पेड़ की छाया में हुआ, इसीलिए वट सावित्री के दिन बरगद की पूजा की जाती है।

तभी सावित्री ने अपने सामने एक आकृति देखी: ऊँचा कद, साँवला रंग, लाल वस्त्र, सिर पर मुकुट, सूर्य जैसी चमकती आँखें और हाथ में पाश। वह सत्यवान के पास खड़ा होकर उसे देख रहा था। सावित्री ने पति का सिर धीरे से नीचे रखा, उठी और हाथ जोड़कर पूछा कि आप कौन हैं। उत्तर मिला, “मैं यमराज हूँ, मृत्यु का देवता। तुम्हारे पति की आयु पूरी हो गई है और मैं उसे लेने आया हूँ। वह धर्मात्मा और गुणवान है, इसलिए अपने दूतों को भेजने के बजाय मैं स्वयं आया हूँ।” यमराज ने अपने पाश से सत्यवान के शरीर से अँगूठे के बराबर जीव को खींच लिया और दक्षिण दिशा की ओर चल पड़े। सत्यवान का शरीर निष्प्राण पड़ा रह गया।

वट सावित्री पूजा

कथा: पांचवां भाग

सावित्री ने किया यमराज का अनुसरण

वट सावित्री व्रत कथा

सावित्री उनके पीछे पीछे चल पड़ी। यमराज ने मुड़कर कहा, “सावित्री, लौट जाओ और पति का अंतिम संस्कार करो। जहाँ तक कोई साथ आ सकता है, तुम आ चुकी हो।” सावित्री बोली, “मेरे पति को जहाँ ले जाया जाए या वे स्वयं जहाँ जाएँ, वहीं मुझे भी जाना है। यही सनातन धर्म है। मेरे व्रत, बड़ों की सेवा, पति के प्रति प्रेम और आपकी कृपा से मेरा मार्ग कोई नहीं रोक सकता।” फिर उसने धर्म की बातें कहीं: ज्ञानी कहते हैं कि साथ में सात कदम चलने से मित्रता हो जाती है, और आपके साथ इतना चलकर अब आप मेरे मित्र हैं।

उसकी बातों से यमराज प्रसन्न हुए। वे बोले, “सत्यवान के प्राणों को छोड़कर कोई भी वर माँग लो।” सावित्री ने माँगा कि उसके अंधे और राज्य से वंचित ससुर को आँखों की रोशनी, बल और उनका राज्य वापस मिल जाए। यमराज ने कहा, “तथास्तु। अब लौट जाओ, तुम थक गई हो।” पर सावित्री बोली, “पति के पास रहकर मुझे थकान कैसी? जहाँ वे जाएँगे, वहीं मैं जाऊँगी। कुछ और सुनिए: सज्जनों का एक बार का संग भी अनमोल होता है, और उनसे की गई मित्रता कभी व्यर्थ नहीं जाती।”

यमराज फिर प्रसन्न हुए और सत्यवान के प्राणों को छोड़कर दूसरा वर माँगने को कहा। सावित्री ने माँगा कि उसके पिता राजा अश्वपति, जिनके कोई पुत्र नहीं है, उन्हें वंश चलाने के

लिए सौ पुत्र प्राप्त हों। यमराज ने यह वर भी दे दिया और फिर लौटने को कहा। फिर भी सावित्री चलती रही और सज्जनों के आचरण की बातें करती रही: मन, वचन और कर्म से किसी प्राणी को कष्ट न देना, सब पर दया करना, दान देना और अपने वचन का पालन करना। उसने स्वयं यमराज की भी स्तुति की कि आप धर्मराज हैं और सब प्राणियों के साथ समान न्याय करते हैं।

उसकी बुद्धिमानी से प्रभावित होकर यमराज बोले, “तुम जितना बोलती हो, तुम्हारे प्रति मेरा आदर उतना ही बढ़ता जाता है। तीसरा वर माँगो।” सावित्री ने कहा, “तो यह वर दीजिए कि सत्यवान से मुझे सौ बलवान और वीर पुत्र प्राप्त हों, जो हमारे वंश को आगे बढ़ाएँ।” यमराज ने प्रसन्न होकर कहा, “तथास्तु।” तब सावित्री ने हाथ जोड़कर कहा, “प्रभु, आपने मुझे सत्यवान से पुत्रों का वर दिया है, पर सत्यवान के बिना यह वर पूरा नहीं हो सकता, और आपका वचन कभी झूठा नहीं होता। मेरे पति के प्राण लौटा दीजिए।” यमराज मुस्कुराए, उन्होंने पाश खोलकर सत्यवान के जीव को मुक्त कर दिया और कहा, “तुम्हारा पति मुक्त है। वह तुम्हारे साथ लंबा जीवन जिएगा और तुम्हारे कुल का सम्मान होगा।” सावित्री को आशीर्वाद देकर यमराज अपने मार्ग पर चले गए।

वट सावित्री पूजा

कथा: छठा भाग

सत्यवान का जीवित होना और परिवार का सुख लौटना

वट सावित्री व्रत कथा

सावित्री जल्दी जल्दी उस स्थान पर लौटी जहाँ सत्यवान का शरीर पड़ा था। उसने बैठकर फिर से उसका सिर अपनी गोद में रखा। धीरे धीरे सत्यवान ने आँखें खोलीं, जैसे लंबी नींद से जागा हो। वह बोला, “मैं बहुत देर सोया। तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं? और वह साँवला पुरुष कहाँ गया जो मुझे ले जा रहा था?” सावित्री ने कहा, “आप देर तक सोए और मृत्यु के देवता चले गए। रात हो चुकी है, मैं कल आपको सब बताऊँगी। अब घर चलिए, माता पिता चिंता कर रहे होंगे।”

अँधेरा हो चुका था और सत्यवान अभी कमज़ोर था, इसलिए सावित्री ने कुल्हाड़ी एक कंधे पर रखी, सत्यवान का हाथ दूसरे कंधे पर लिया और उसे सहारा देकर वन के रास्ते घर ले चली। उधर आश्रम में द्युमत्सेन की आँखों की रोशनी अचानक लौट आई थी। वे और उनकी पत्नी व्याकुल होकर पुत्र को खोज रहे थे। ऋषियों ने उन्हें धीरज बाँधाया कि सावित्री के पुण्य और व्रत के प्रभाव से सत्यवान अवश्य जीवित होगा। थोड़ी ही देर में दोनों आ पहुँचे। सावित्री ने वन में जो कुछ हुआ था, सब बताया और सबने उसकी प्रशंसा की।

अगली सुबह शाल्व देश से दूत आए। राज्य हड़पने वाले शत्रु को उसी के मंत्री ने मार डाला था और प्रजा अपने सच्चे राजा को वापस चाहती थी। आँखों की रोशनी पा चुके द्युमत्सेन

परिवार के साथ अपने राज्य लौटे और सत्यवान युवराज बने। समय आने पर राजा अश्वपति को सौ पुत्र प्राप्त हुए और सावित्री व सत्यवान को भी सौ पुत्र हुए। इस तरह यमराज के सभी वर सच हुए।

इस प्रकार सावित्री ने अपनी भक्ति, बुद्धि और साहस से पति को मृत्यु से लौटा लिया और दोनों परिवारों में सुख भर दिया। परंपरा के अनुसार जो स्त्री श्रद्धा से वट सावित्री व्रत रखती है और यह कथा सुनती है, वह सावित्री के आदर्श को याद करती है और अपने परिवार के कल्याण की प्रार्थना करती है। जैसे सावित्री का घर आनंद से भर गया, वैसे ही इस कथा को पढ़ने और सुनने वाले सबके घर आनंद से भरें। बोलो सावित्री माता की जय।

वट सावित्री पूजा

वट सावित्री की मराठी आरती

आरती वडराजा

अश्वपती पुसता झाला। नारद सांगताती तयाला॥
 अल्पायुषी सत्यवंत। सावित्रीनें का प्रणीला॥
 आणखी वर वरी बाळे। मनीं निश्चय जो केला॥
आरती वडराजा॥१॥

दयावंत यमदूजा। सत्यवंत ही सावित्री॥
भावे करीन मी पूजा। आरती वडराजा॥४॥

ज्येष्ठामास त्रयोदशी। करिती पूजन वडाशीं॥
 त्रिरात्र व्रत करूनीया। जिंकी तूं सत्यवंताशी॥
आरती वडराजा॥२॥

स्वर्गावरी जाऊनियां। अग्निखांब कचळीला॥
 धर्मराजा उचकला। हत्या घालील जीवाला॥
 येई ग पतिव्रते। पती नेई गे आपुला॥
आरती वडराजा॥३॥

जाऊनियां यमापाशीं। मागतसे आपुला पती॥
 चारी वर देऊनियां। दयावंता द्यावा पती॥
आरती वडराजा॥४॥

पतिव्रते तुझी कीर्ति। ऐकुनी ज्या नारी॥
 तुझें व्रतें आचरती। तुझी भुवनें पावती॥
आरती वडराजा॥५॥

पतिव्रते तुझी स्तुती। त्रिभुवनी ज्या करिती॥
 स्वर्गी पुष्पवृष्टी। करुनियां आणिलासी आपुला पती॥
अभय देऊनियां। पतिव्रते तारी त्यासी॥६॥

वट सावित्री पूजा

भावार्थ

आरती का सरल अर्थ

यह आरती पुरानी लोक मराठी में है और कुछ शब्दों के अर्थ अलग-अलग घरों में थोड़े अलग समझे जाते हैं। नीचे हर पद का सरल भाव दिया गया है।

अश्वपती पुसता झाला: राजा अश्वपति पूछते हैं और देवर्षि नारद उन्हें बताते हैं कि सत्यवान अल्पायु है, फिर सावित्री ने उसे क्यों चुना? बेटी, कोई दूसरा वर चुन लो। पर सावित्री ने मन में जो निश्चय कर लिया, वह अटल रहा। हे वटराज, आपकी आरती।

टेक: दयावंत यमदूजा: दयालु यमराज, सत्यवान और सावित्री, मैं भाव से इनकी पूजा करूँगी। हे वटराज, आपकी आरती। बहुत से घरों में हर पद के बाद यह टेक दोहराई जाती है।

ज्येष्ठामास त्रयोदशी: ज्येष्ठ मास की त्रयोदशी को स्त्रियाँ बरगद के पास पूजा करती हैं। हे सावित्री, तीन रात का व्रत करके तुमने सत्यवान को जीत लिया। यह कथा के त्रिरात्र व्रत की याद है, इसीलिए परंपरा में व्रत त्रयोदशी से आरंभ होता है।

स्वर्गावरी जाऊनियां: यमराज के पीछे स्वर्ग की ओर जाते हुए सावित्री ने अग्नि का खंभा पकड़ लिया। धर्मराज यम विचलित हो गए कि कहीं वह अपने प्राण न दे दे, और बोले: हे पतिव्रता, आओ, अपने पति को ले जाओ। अग्नि स्तंभ का प्रसंग लोक परंपरा का है, महाभारत की कथा में नहीं मिलता।

जाऊनियां यमापार्शीं: यमराज के पास जाकर वह अपना पति माँगती है। चार वर दे दिए हैं, तो हे दयालु, अब पति भी लौटा दो। महाभारत में यमराज बातचीत के दौरान कई वर देते हैं; लोकगीतों में इनकी गिनती अलग-अलग मिलती है।

पतिव्रते तुझी कीर्ति: हे पतिव्रता, तुम्हारी कीर्ति सुनकर जो स्त्रियाँ तुम्हारा व्रत करती हैं, मान्यता है कि वे तुम्हारे पुण्य लोक को पाती हैं।

पतिव्रते तुझी स्तुति: तीनों लोक तुम्हारी स्तुति करते हैं। जब तुम अपने पति को वापस लाई, तब स्वर्ग से फूल बरसे। हे पतिव्रता, अभय देकर अपने भक्तों की रक्षा करो।

क्षमा प्रार्थना

समापन प्रार्थना

आरती के बाद बहुत सी महिलाएँ अपने शब्दों में एक छोटी प्रार्थना करके पूजा पूरी करती हैं, जिसमें सावित्री माता को धन्यवाद दिया जाता है और पूजा में हुई किसी भी भूल के लिए क्षमा माँगी जाती है। एक सरल प्रार्थना इस तरह हो सकती है:

हे सावित्री माता, मैंने अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार वट वृक्ष और आपकी पूजा की है।

पूजा में जाने अनजाने जो भूल हुई हो, उसे क्षमा करना।

जैसे आपने धैर्य, बुद्धि और प्रेम से अपने परिवार की रक्षा की, वैसा ही धैर्य और विवेक मुझे भी देना।

मेरे पति और पूरे परिवार को स्वस्थ, सुखी और एक दूसरे से जुड़ा रखना।

जय सावित्री माता।

आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकती हैं। शब्दों से अधिक महत्व मन के भाव का है।

बोलो सावित्री माता की जय।

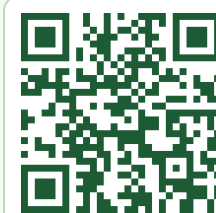
वट सावित्री पूजा



वट सावित्री पूजा

निःशुल्क पुस्तिका

वट सावित्री की तिथि, बरगद का महत्व, सावित्री और यमराज का संवाद, व्रत के नियम, उद्यापन विधि और अंग्रेज़ी में कथा, सब कुछ एक ही जगह पढ़ें।



स्कैन करें या खोलें

vatsavitripuja.com

यह पुस्तिका निःशुल्क है। इसे परिवार और सखियों के साथ साझा करें।